स्वदेश- विदेश

स्वदेश् विदेश् उछलि उठिछे तोमार नवीन तन्त्र, आकाश बाताश ध्वनिया तुलिछे तोमार मोहन मन्त्र।

नन्दित-धरा-मन्दिर माझे धर्मेर स्त्रक् गन्ध,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥

अरुण किरण उछलि उठिलो उदिले जे दिन बङ्गे, स्वरग करिल सुरभि ब्रष्टि बरषि आशिष सङ्गे।

प्रेमेर पूण्य- प्रवाहे साजिल गौर नित्यानन्द,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥

द्युलोकेर छबि हेरिले पुलके गुरुर चरण तले, आर्तेर सेवा मर्त्ये आनिले भासिया नयन जले।

विश्वप्रेमेर विकशित खनि- चित्ते हरषनन्द,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥

भूधरे सागरे गहने कानने जपिले कतो न निशि, तुषार हिमानि गिरिकन्दर भ्रमिले कतो न दिशि

अङ्कुर पुनः शङ्कर-ग्यान शाक्येर त्यगानन्द,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥

ज्ञानेर गरिमा गौरव गान भारत-मर्मवानी, पास्चात्य सेथा वेदान्त गाथा शुनि विस्मय मानि।

स्निग्ध भावेर शक्ति माधुरि मुग्ध नूतन छन्द,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥

शिकागो सङ्घे सङ्गीत तव शीर्षे उठिल भाशि, शुनिल विश्व, शुनिल निःस्व, शुनिल प्रासादवासी,

स्त्रजिले "श्रीमठ" कुञ्जकुटीर तीर्थ मुखरानन्द,

मोदेर विवेकानन्द तुमि गो विश्श्व विवेकानन्द॥